भोपाल (म.प्र.) क्षेत्र में आयोजित 'स्वर्णिम युग के लिए मूल्यनिष्ठ प्रशासन अभियान' का समाचार

ब्रह्माकुमारीज़ के भोपाल (म.प्र.) क्षेत्र एवं प्रशासक सेवा प्रभाग (माउण्ट आबू) द्वारा 'स्वर्णिम युग के लिए मूल्यनिष्ठ प्रशासन अभियान' का आयोजन 2 से 10 दिसम्बर, 2010 तक ग्वालियर, मुरैना, छतरपुर, सतना, चित्रकूट, जबलपुर, पंचमढ़ी, होशंगाबाद और भोपाल शहर के विभिन्न स्थानों पर प्रशासनिक क्षेत्र से संलग्न अधिकारी, व्यवस्थापक, प्रबंधक एवं कर्मचारीगणों के लिए विभिन्न कार्यक्रमों/सम्मेलनों का आयोजन किया गया, जिसका संक्षिप्त समाचार निम्नलिखित है:

ग्वालियर में आयोजित 'स्वर्णिम युग के लिए परमात्म योजना' अंतर्गत आध्यात्मिक मेले में प्रशासक वर्ग का सम्मेलन

इस सम्मेलन में 'तनावमुक्त प्रशासन' विषय पर ब्र.कु. रेणू बहन, कार्यकारी सदस्य, प्रशासक सेवा प्रभाग, जोधपुर ने प्रभावशाली वक्तव्य दिया। ब्र.कु. हरीश, मुख्यालय संयोजक, प्रशासक सेवा प्रभाग, माउण्ट आबू ने मुख्य वक्तव्य में कहा कि आज के जीवन में सभी प्रकार के तनावों से मुक्त होने के लिए स्व-शासन जरुरी है। राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश बहन, क्षेत्रिय संचालिका एवं राष्ट्रीय संयोजिका, प्रशासक सेवा प्रभाग, भोपाल क्षेत्र (म.प्र.) ने तनावमुक्त होने के लिए राजयोग के अभ्यास की विधि द्वारा दिव्य अनुभूति कराई।

इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि भ्राता डॉ. जी.पी. के.एस. प्रसाद, हेड ऑफ द डिपार्टमेण्ट (बायोकेमेस्ट्री), जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर ने जीवन में सभी प्रकार के दबावों से मुक्त होने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सिखाए जा रहे ज्ञान का अनुकरण करना सर्वश्रेष्ठ बताया। भ्राता श्री एच.एन. गोस्वामी, रिटायर्ड, अध्यापक, आयुर्वेदिक कॉलेज, ग्वालियर ने परमात्म-मिलन को सर्वोत्तम कहा और इसकी अनुभूति के लिए ज्ञान और योग का अभ्यास जरुरी बताया। भगिनी अलका श्रीवास्तव, डायरेक्टर, लक्ष्मीबाई नागरिक महिला बैंक ने महिला सशक्तिकरण पर जोर दिया। ब्र.कु. जूलि बहन, राजयोग शिक्षिका, ज्ञान वीणा काम्प्लेक्ष, मालनपुर-ग्वालियर ने कार्यक्रम का सुंदर संचालन किया। इस सम्मेलन द्वारा लगभग 250 अधिकारीगण ने लाभ लिया।

अभियान का उद्घाटन सत्र:

इस सत्र का आयोजन ज्ञानवीणा काम्प्लेक्स, मालनपुर, ग्वालियर में किया गया। इस सत्र में अभियान का शुभारंभ राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश बहन, राष्ट्रीय संयोजिका, प्रशासक सेवा प्रभाग की उपस्थिति में दीप प्रज्जवलित कर किया गया।

ब्र.कु. रेणू, व्यवस्थापक सदस्य, प्रशासक सेवा प्रभाग, जोधपुर ने अपने प्रवचन में कहा कि आत्मविश्वास ही सबसे बड़ी सम्पदा है, इससे सफलता आपके साथ होगी। इसके लिए सकारात्मक एवं शुद्ध चिंतन करना चाहिए।

भ्राता पंडित चित्तरंजन दास, वाईस चांसलर, राजा मानसिंह तोमर कला एवं संगीत विश्वविद्यालय, ग्वालियर ने कहा कि जीवन में और संसार में सब कुछ होते हुए आत्म-ज्ञान से ही सर्व प्राप्तियाँ कर सकते हैं। आपने

अभियान के लिए शुभकामनाएं दी।

ब्र.कु. हरीश, मुख्यालय संयोजक, प्रशासक सेवा प्रभाग, माउण्ट आबू ने स्वागत प्रवचन में कहा कि तनावमुक्त जीवन से तनावमुक्त प्रशासन कर सकते हैं, इसके लिए आध्यात्मिकता अपनानी चाहिए। प्रशासक वर्ग में आध्यात्मिक जागृति के लिए मध्यप्रदेश के भोपाल क्षेत्र में इस अभियान का आयोजन किया गया है।

ब्र.कु. भानू भाई, शांतिवन, आबूरोड ने सुंदर गीत सुनाकर कहा कि राजयोग से ही तनावमुक्त जीवन जी सकते हैं।

ब्र.कु. रामनाथ, मुख्यालय संयोजक, धार्मिक सेवा प्रभाग, माउण्ट आबू ने कहा कि व्यक्ति में कमियों के कारण सम्पूर्णता नहीं आ सकती, इसके लिए अध्यात्म शिक्षा जरुरी है।

ब्र.कु. शैलेष, व्यवस्थापक सचिव, प्रशासक सेवा प्रभाग, गोधरा ने कहा कि स्वर्णिम युग में मूल्यनिष्ठ प्रशासन था, इसका निर्माण करना चाहते हैं, तो स्व-प्रशासन और अध्यात्म-प्रबंधन हमें करना ही है।

भ्राता के.पी. श्रीवास्तव, डिप्टी एकाउण्ट जनरल, भारत सरकार ने कहा कि प्रशासकों में शुभभावना, एकाग्रता और निष्पक्षता होनी चाहिए, तब ही अच्छा प्रशासन किया जा सकता है।

भ्राता रितोरिया, निवृत्त आर.टी.ओ. ने कहा कि कर्मों में श्रेष्ठता लाने से ही मूल्यनिष्ठ प्रशासन कर सकते हैं। भ्राता के.पी.एस. प्रसाद, वाईस प्रेसीडेण्ट, इलेक्ट्रॉनिक इंडस्ट्रीज़, ग्वालियर ने कहा कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से नकारात्मकता आती है इसलिए इसे आध्यात्मिकता से खत्म करनी है।

ब्र.कु. नीतू बहन, राजयोग शिक्षिका, इदगाह सेवाकेंद्र, भोपाल ने राजयोग की विधि द्वारा दिव्य यात्रा की अनुभूति कराई। ब्र.कु. रामनिवास, निवृत्त अधिकारी, ए.जी. डिपार्टमेण्ट, ग्वालियर ने सुंदर रीति से आभार प्रदर्शन किया।

इस कार्यक्रम का सुंदर संचालन ब्र.कु. जूलि बहन, राजयोग शिक्षिका, ज्ञान वीणा काम्प्लेक्स, मालनपुर, ग्वालियर ने किया। इस कार्यक्रम में प्रेस्टीज़ मैनेजमेण्ट कॉलेज, ग्वालियर के लगभग 80 एम.बी.ए. के विद्यार्थी विशेष रुप से उपस्थित रहे।

मुरैना में प्रशासक वर्ग का राष्ट्रीय सम्मेलन

इस कार्यक्रम का आयोजन होली हाउस, ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर किया गया। इस सम्मेलन में वक्ताओं के प्रवचन के मुख्य बिन्दु निम्नलिखित है:

ब्र.कु. रेणू, व्यवस्थापक सदस्य, प्रशासक सेवा प्रभाग, जोधपुर ने वक्तव्य में कहा कि प्रशासक को लोगों की संवेदनाओं को समझकर विधि-विधान की मर्यादा में रहकर सुखदायी प्रशासन करना है।

ब्र.कु. रामनाथ, मुख्यालय संयोजक, धार्मिक सेवा प्रभाग, माउण्ट आबू ने प्रभावशाली प्रवचन में कहा कि मैं कौन? मेरा रुप क्या?मेरे गुण कौन से है? मुझे क्या करना? इसका चिंतन आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर प्रतिदिन करने से स्वयं की एकाग्रता का विकास होता है और जीवन में आध्यात्मिकता का संचार होता है। इससे सहज ही तनावों से मुक्ति भी मिल सकती है।

ब्र.कु. हरीश, मुख्यालय संयोजक, प्रशासक सेवा प्रभाग, माउण्ट आबू ने प्रेरक प्रवचन में कहा कि प्रशासक को तनावमुक्त रहना है तो सदा अपने आपको प्रजा का सेवाधारी व निमित्त सेवक समझकर प्रशासन करना है। मानव-मूल्यों से ही मानव-जीवन का मूल्य (ऊँचाई) है।

भ्राता एम.के. अग्रवाल, कलेक्टर, मुरैना ने मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि हर व्यक्ति किसी न किसी रुप

में प्रशासन से जुड़ा हुआ है। व्यक्ति को अपनी फर्ज/भूमिका सच्चाई से अदा करनी चाहिए। मानव-अधिकार का हनन नहीं होना चाहिए। अच्छे कर्म करना ही मानव मूल्य है।

ब्र.कु. रेखा बहन, संचालिका, ब्रह्माकुमारीज़ मुरैना सेवाकेंद्र ने कहा कि तनावमुक्त समाज की स्थापना करनी है तो राजयोग का अभ्यास और जीवन में मूल्यों की धारणा करनी जरुरी है। आपने तनावमुक्त जीवन जीने के लिए राजयोग शिविर का लाभ लेने के लिए अनुरोध किया।

भ्राता रामसेवक गुप्ता, महामंत्री, बी.जे.पी. मुरैना ने सम्मानीय मेहमान एवं वक्ताओं का तथा आमंत्रित मेहमानों का आभार प्रस्तुत किया। ब्र.कु. शैलेष, व्यवस्थापक सचिव, प्रशासक सेवा प्रभाग, गोधरा ने सम्मेलन का कुशलतापूर्वक संचालन किया।

इस कार्यक्रम में लगभग 100 प्रशासनिक अधिकारियों ने लाभ लिया।

छतरपुर (म.प्र.) में प्रशासक सम्मेलन

इस सम्मेलन का आयोजन ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र के सुंदर सभागृह में सम्मपन्न हुआ।

ब्र.कु. शैलजा, जिला प्रभारी, ब्रह्माकुमारीज़, छतरपुर ने सुंदर शब्दों से मंचासीन मेहमानों तथा आमंत्रित मेहमानों का स्वागत किया। वर्तमान दुनिया को परमात्मा 'स्वर्णिम दुनिया' में आध्यात्मिकता द्वारा कैसे परिवर्तन कर रहे हैं, इसका अनुभव करने के लिए अनुरोध भी किया।

ब्र.कु. हरीश, मुख्यालय संयोजक, प्रशासक सेवा प्रभाग, माउण्ट आबू ने मुख्य वक्तव्य में कहा कि स्व-अनुशासन से कार्यक्षेत्र पर कुशल, सफल और श्रेष्ठ प्रशासन कर सकते हैं। नियम व कानून की मर्यादा में रहकर संतुष्ट करने का प्रयास करना है। इसके लिए स्वयं में नियंत्रण व शासन करने की शक्तियों का विकास राजयोग से करना है।

भ्राता अवधेश प्रतापसिंह जी, आई.ए.एस. अपर सचिव, विधानसभा, भोपाल ने प्रेरक उद्‌बोधन में कहा कि प्रशासन में चुनौतियों का समाधान अध्यात्म से हो सकता है। परमात्म-शक्ति से स्वयं की स्थिति को मजबूत बनानी है। प्रशासक मानव मूल्यों एवं सेवाभावना से कैसी भी परिस्थिति में कैसी भी जिम्मेवारी निभा सकता है।

ब्र.कु. रेणू बहन, व्यवस्थापक सदस्य, प्रशासक सेवा प्रभाग, जोधपुर ने स्लाईड प्रेजेण्टेशन के द्वारा कहा कि निर्णय के बाद कर्म होता है, स्थिरता से सुरक्षा आती है और मूल्यों से जीवन श्रेष्ठ बनता है। इसके लिए स्वयं का सशक्तिकरण योग और ज्ञान करना जरुरी है।

ब्र.कु. रामनाथ, मुख्यालय संयोजक, धार्मिक सेवा प्रभाग, माउण्ट आबू ने मुख्य प्रवचन में कहा कि प्रशासन व प्रबंधन में आध्यात्मिकता की कमी के कारण सफलता व पूर्णता नहीं आ सकती। इसके लिए अपनी एकाग्रता को राजयोग के चिंतन से बढ़ाना चाहिए।

ब्र.कु. शैलेष, व्यवस्थापक सचिव, प्रशासक सेवा प्रभाग, गोधरा ने सभी मेहमानों, श्रोताओं का सुंदर रीति से आभार प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम द्वारा लगभग 125 न्याय एवं प्रशासन क्षेत्र से संलग्न महानुभावों ने लाभ लिया।

खजुराहो (म.प्र.) में एयरपोर्ट ऑथोरिटी के करीब 70 अधिकारियों को ब्र.कु. रेणू बहन, व्यवस्थापक सदस्य, प्रशासक सेवा प्रभाग, जोधपुर ने सुंदर रीति से प्रशिक्षण दिया।

सतना (म.प्र.) में प्रशासक सम्मेलन

'बेहतर प्रशासन में आध्यात्मिकता की भूमिका' विषय पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन के वक्ताओं के प्रवचन के कुछ बिन्दु निम्नलिखित है:

ब्र.कु. रेणू बहन, व्यवस्थापक सदस्य, प्रशासक सेवा प्रभाग, जोधपुर ने वक्तव्य में कहा कि प्रशासक चरित्रवान होना चाहिए, तब वह दूसरों पर अच्छा प्रभाव होता है। हमें परिवार में, कार्यालय में कैसे चलना है? कैसा व्यवहार करना है? यह हमें आध्यात्मिकता द्वारा सीखना है।

ब्र.कु. शैलेष, व्यवस्थापक सचिव, प्रशासक सेवा प्रभाग, गोधरा ने दिव्य अनुभव बताते हुए कहा कि स्वयं का राजयोग और आध्यात्मिक ज्ञान, मानव मूल्यों की धारणा से सशक्तिकरण किया जा सकता है। इससे हम मूल्यनिष्ठ प्रशासन कितनी भी कठिनाइयाँ आते हुए सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

ब्र.कु. रामनाथ, मुख्यालय संयोजक, धार्मिक सेवा प्रभाग, माउण्ट आबू ने प्रवचन में कहा कि स्वयं पर शासन करने वाला दूसरों पर अच्छी रीति से शासन कर सकता है। स्व परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होगा इसलिए स्वयं के विचार, निर्णय और कर्म में कुशलता लानी है।

सम्मानीय मेहमान भ्राता प्रदीप सिंह, दूरसंचार प्रबंधक, बी.एस.एन.एल., सतना ने सम्बोधन में कहा कि प्रशासक को दूसरों के लिए प्रेरणामूर्ति बनना है। इसके लिए दूसरों के प्रति शुभभावना रखनी है और अपने दुर्गण/कमियों को दूर करना है। प्रशासक की दूसरों की समस्याओं को अच्छी तरह से सुनकर हल करने का प्रयास करना चाहिए।

ब्र.कु. हरीश, मुख्यालय संयोजक, प्रशासक सेवा प्रभाग, माउण्ट आबू ने प्रवचन में कहा कि स्वर्णिम दुनिया में बेहतर प्रशासन था, अब गुण, शक्ति, मूल्यों को स्वयं में धारण कर इसके लायक बनाना है। अहंकारी नहीं, विनम्र बनना है। स्वार्थ नहीं, सेवाभावना रखनी है। सेवा से दुआ प्राप्त करनी है। इसके लिए आध्यात्मिकता से स्वयं को शक्तिशाली बनाना है।

सम्मानीय मेहमान भ्राता पुष्कर तोमर, महापौर, महानगरपालिका, सतना ने उद्‌बोधन में कहा कि मानव को जीवित रहने तक सीखने की भावना रखनी है। आध्यात्मिकता से ही अपना और जनता का कल्याण कर सकते हैं। प्रशासक को गरीबों की संवेदनाओं को समझकर उनके दुखों को दूर करने की समाज सेवा करनी है।

सम्मानीय मेहमान भ्राता आर.सी. यादव, एच.आर.डी. अधिकारी, बिरला सीमेण्ट, सतना ने प्रवचन में कहा कि प्रशासक को आदर्शमूर्त (Role-Model) बनना है, दूसरों प्रति सहानुभूति रखनी है। देवताई कार्यों से ही लोकप्रिय प्रशासक बन सकते हैं।

राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी, संचालिका, ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र, सतना ने आभार दर्शन करते हुए कहा कि परमात्मा हमें श्रेष्ठ कर्म करके श्रेष्ठ प्रशासन करने की विधि सीखाते हैं, जो हमें सीखकर स्वयं की और दूसरों की उन्नति करना है।

इस कार्यक्रम का सुंदर संचालन ब्र.कु. रेखा बहन, बैतूल ने किया, जिसमें लगभग 60 प्रशासनिक अधिकारी लाभान्वित हुए।

भोपाल (म.प्र.) में स्वर्णिम युग के लिए मूल्यनिष्ठ प्रशासन अभियान का अंतिम प्रशासक सम्मेलन

इस सम्मेलन का आयोजन क्षेत्रिय मुख्यालय राजयोग भवन, अरेरा कॉलोनी, भोपाल में किया गया। इस सम्मेलन में विद्वान वक्ताओं ने किए गए सम्बोधन के कुछ अंश निम्नलिखित है:

भ्राता अवधेश प्रतापसिंह, अपर सचिव, विधानसभा, म.प्र. ने प्रवचन में कहा कि मूल्यनिष्ठ प्रशासन स्थापन करने के लिए प्रशासक को अपनी आत्मा को मजबूत बनाने परमशक्ति के स्त्रोत से सम्बन्ध जोड़ना है, इससे व्यक्ति में पारदर्शिता, उदारता, संवेदनशीलता आदि जैसे मूल्य पुन: जागृत होंगे।

ब्र.कु. रेणू बहन, व्यवस्थापक सदस्य, प्रशासक सेवा प्रभाग ने स्लाईड प्रेजण्टेशन से वक्तव्य में कहा कि मूल्यों की धारणा में संतुलन होना जरुरी है, इससे प्रशासक आने वाली चुनौतियों का सहज रीति से समाधान कर सकेगा। इसके लिए मेडिटेशन का अभ्यास आवश्यक है।

राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश बहन, क्षेत्रिय संचालिका, ब्रह्माकुमारीज़, भोपाल क्षेत्र (म.प्र.) तथा राष्ट्रीय संयोजिका, प्रशासक सेवा प्रभाग ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि संसार के सभी प्रशासन में संतुष्ट एवं संतुलित जीवन जीने से बेहतर कारोबार कर सकते हैं, इसके लिए व्यक्ति को राजयोगी बनना है। स्वर्णिम युग की रचना करने के लिए सभी के योगदान की आवश्यकता है।

ब्र.कु. हरीश, मुख्यालय संयोजक, प्रशासक सेवा प्रभाग, माउण्ट आबू ने मुख्य वक्तव्य में कहा कि इस अभियान की समाप्ति नहीं लेकिन भारत व देश-विदेश में प्रशासनिक क्षेत्र में आध्यात्मिकता का संचार करने के लिए प्रेरणादायी बनकर रहेगा। बाह्य रूप की चीजों से व्यक्ति अल्पकालीन प्राप्तियाँ करता है, लेकिन आंतरिक रुप की शक्तियों से स्व पर शासन करने की कला सीख जाता है। प्रशासकों को अपने में सकारात्मक परिवर्तन करना चाहिए।

सम्मानीय मेहमान भ्राता एस.के. सिंह, वाईस चांसलर, मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय ने कहा कि आत्म-विश्वास से कोई भी कार्य असम्भव नहीं होता, इसके लिए आध्यात्मिक विकास अपने में करना है। प्रशासकों को अपने मूल्य आधारित आचरण से सेवा करनी है। इससे वह दुआओं को प्राप्त कर सकेगा।

विशेष अतिथि भ्राता के.एल. मीना, आई.जी., म.प्र. भोपाल ने प्रवचन में कहा कि सामाजिक जीवन में एवं प्रशासन में ईमानदारी जैसे मूल्य होना जरुरी हो। अच्छाई के अमल से ही सच्चे रामराज्य की स्थापना होगी।

भ्राता ए.के. श्रीवास्तव, डी.पी.ओ., पश्चिम मध्य रेलवे, भोपाल ने प्रवचन में कहा कि आज के मैनेजमेण्ट में सुधार लाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का मैनेजमेण्ट उदाहरणीय रुप है। राजयोग से ही जीवन जीने की कला सीखी जा सकती है। अभियान की सफलता के लिए आपने शुभकामनाएं प्रगट की।

भ्राता एस.एन. राव, पूर्व अधिक मुख्य सचिव, मध्यप्रदेश सरकार ने दिव्य अनुभव सुनाते हुए कहा कि इस संस्थान में पवित्रता, स्वच्छता, संयोजन आदि में अद्भुतता का दर्शन होता है। व्यक्ति के मन, बुद्धि, संस्कार का प्रभाव उनके कार्यों पर पड़ता है इसलिए व्यक्ति को कार्यों में परिवर्तन करना होगा। परमात्म-याद से भौतिक व शारीरिक समस्याओं का हल चमत्कारिक रुप से हो सकता है- यह स्वयं का अनुभव है।

इस कार्यक्रम का सुंदर संचालन ब्र.कु. रीना बहन, राजयोग शिक्षिका, भोपाल ने किया। इस सम्मेलन में लगभग 100 प्रशासनिक अधिकारियों ने भाग लिया।